Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-33-37

ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 33-37
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

शेख महंमद मुजाहेद शेख अहेमद
शोध छात्र
स्वा. रा. ती. म. विश्वविद्यालय, नांदेड़, महाराष्ट्र.

Corresponding Author :

शेख महंमद मुजाहेद शेख अहेमद
शोध छात्र
स्वा. रा. ती. म. विश्वविद्यालय, नांदेड़, महाराष्ट्र.

असम में उल्फा आंतकवाद : 'देश भीतर देश' उपन्यास के विशेष संदर्भ में

सारांश:
आज पूरी दुनिया आतंकवाद की समस्या से झुँझ रही है। आतंकवाद यह देश की सुरक्षा और कानून व्यवस्था को धोका निर्माण करते है। असम में आर्थिक, राजकीय और सामाजिक समस्याएं हल करने में प्रदेश की सरकार नाकाम रही। बांग्लादेशियों की घुसपैठी बढ़ने लगी। असम में विकास का अभाव था। पूर्वोत्तर भारत में उल्फा नाम की आतंकी संगठन ने प्रादेशिक अस्मिता के कारण असम में आतंक बनाया और भारत सरकार से स्वतंत्र असम की माँग करने लगे। उल्फा को स्थानिक असमियों का जनसमर्थन हासिल था। क्योंकि उलफाइयों को ढूँढने के लिए सुरक्षा बलों ने स्थानिक असमियों पर अत्याचार किए थे। ऑपरेशन बजरंग, ऑपरेशन राइनों और ऑल क्लियर ऑपरेशन से उल्फा को बहुत कमजोर कर दिया। केंद्र-राज्य सरकार और उल्फा के बीच सस्पेंशन ऑफ ऑपरेशन (S00) समझौता किया और असम में शांति निर्माण की।

बीज शब्द: 1. आतंकवाद, 2. उल्फा, 3. ऑपरेशन बजरंग, 4. ऑपरेशन राइनों, 5. ऑल क्लियर ऑपरेशन, 6. नागरिक संशोधन अधिनियम (CAA) ।

वर्तमान में आंतकवाद दुनियाभर में जागतिक समस्या बना हुआ है। इससे दुनिया के कई सारे राष्ट्र जूझ रहे हैं । सार्वजनिक जीवनयापन मुश्किल हो गया है। इससे देश की सुरक्षा और कानून व्यवस्था को सूरंग लग जाता है। देश की सार्वजनिक संपत्ती का अत्याधिक नुकसान होता है। बेगूनाह मासूम सामान्य जनता आंतकी घटना से अपनी जान गँवा बैठते हैं।

के. आर. गुप्ता लिखते हैं-"यह जीवित मानवता के प्रति एक यथार्थ

धमकी उत्पन्न करता है। इसको निर्मित करने में निहित भावना यह है कि, मानव जाति को शांति से वंचित कर दिया जाए। यह न केवल शांति बल्कि सुरक्षा, राष्ट्रों के मध्य आपसी समझ, सामाजिक तथा आर्थिक विकास, प्रजातंत्र आदि के विरुध्द सीधी प्रताड़ना है।"[1] इस तरह आतंकवाद के बारे में अन्य व्याख्या डॉ. आर. एन. त्रिवेदी एवं डॉ. एम. पी. राय के अनुसार- "जीवन, भौतिक अखंडता अथवा मानव स्वास्थ्य को खतरे में डालने वाला, बडे पैमाने पर सम्पत्ति को हानि पहुंचाने वाला कार्य करके जानबूझकर भय का वातावरण उत्पन्न करना।"[2]

उपरोक्त व्याख्या द्वारा हमें आतंकवाद की परिभाषा स्पष्ट होती है। भारत में पंजाब में अलग खलिस्तानवादरी अतिरेकी संघटना, जम्मू-काश्मिर में पाकिस्तान समर्थित अतिरेकी संघटना, असम में उल्फा (यूनाइटेड लिब्रेशन फ्रंट ऑफ असम) ये भारत के आतंकवादी संगठनों के कुछ नाम हैं। उल्फा की स्थापना 7 अप्रैल 1979 में ऊपरी असम के सिबसागर के रंग घर में हुई।

असम में सत्तर के दशक में बांग्लादेशी लोगों की घूसखोरी बढ़ी थी। इसका असर वहाँ के संसाधनों पर होने लगा। रोजगार के अवसर स्थानीय लोगों में कम होने लगे थे। प्रमुख रूप से इन्हें हटाने के लिए "ऑल असम स्टूडेंट यूनियन और ऑल असम गण संग्राम परिषद ने मिल कर जन आन्दोलन छेड़ा था, तभी राज्य के कुछ बुद्धिजीवियों और युवाओं ने सैन्य संघर्ष के जरिए सम्प्रभु समाजवादी असम को स्थापित करने के मक्सद से उल्फा की स्थापना की।"[3] इनमें से भीमकान्त बुरागोहेन, अरविन्द राजखोवा, अनूप चेतिया, प्रदीप गोगोई, परेश बरुआ प्रमुख रूप से शामिल थे। इसके चेयरमैन अरविन्द राजखोवा थे और सैन्य प्रमुख परेश बरुआ थे।

उल्फा के घोषणापत्र में 'सदिम असम' की माँग की गई हैं। यानी स्वतंत्र असम इनका प्रमुख संकल्प है। इनका कहना है कि, अगर असम का इतिहास देखेंगे तो ऐतिहासिक काल में असम अधिकतर अहोम रजाओं के अधीनस्थ रहा है। 1819 ई. में राजा गोविन्द चन्द्र के समय बर्मियों ने असम पर हमला किया था। इन्हे अंग्रेजों ने असम से बाहर खदेडा और दोबारा असम में गोविन्द चन्द्र को राजा की कुर्सी पर बिठाया। इस बदले में गोविन्द चन्द्र को वार्षिक दस हजार रूपये देना बदरपुर (मार्च 1824 ई.) की संधि द्वारा तय हो गया। इसलिए राजा ने अपनी प्रजा पर अधिक कर लगाए। इससे प्रजा में असंतोष निर्माण हुआ। राज्य में राजा का नियंत्रण खत्म हुआ। लोगों ने गोविन्द चन्द्र की(1830ई. में) हत्या कर दी। उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। इसलिए अगस्त 1832 ई. में एक घोषणा द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया। तब से असम भारत का भाग है। इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य से पहले असम भारत में नहीं था तो, इसे स्वतंत्र असम देश बनाने पर ही असम के समस्याओं को हल किया जा सकता है और विकास किया जा सकता है। ऐसे विचार उल्फाइयों के हैं।

असम में 1979 से 1985 तक आंदोलन हुआ। 15 अगस्त 1985 को असम समझौता हुआ। "जिसमें घुसपैठ के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय सीमा को सुरक्षित करने के लिए "उचित स्थानों पर दीवारें, कांटेदार तार की बाड़ और अन्य बाधाएं जैसे भौतिक अवरोधों का निर्माण" और अंतरराष्ट्रीय बांग्लादेश-भारत सीमा पर भूमि और नदी मार्गों पर सुरक्षा बलों द्वारा गश्ती तैनात करने पर सहमत हुई। इसके अलावा असम समझौते में असमिया सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करने पर सहमति व्यक्त की गई थी।"[4] इससे आन्दोलन समाप्त हो गया और नए राजनीतिक पार्टी का जन्म हुआ 'असम गण परिषद'। 1985 ई. में इलेक्शन हुए और मंहत की सरकार स्थापन हुई। इस समझौते को उल्फा ने मानने से इन्कार कर दिया। "वह सदिन असम से कम पर राज़ी नहीं था। नयी सरकार और उल्फा के बीच इसके बाद रिश्ते अच्छे बने रहे। उल्फा धीरे-धीरे अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने में जुट गया।"[5]

उल्फा का 1986 में नगालैंड के सबसे

खतरनाक उग्रवादी संगठन एनएससीएन और म्यांमार में सक्रिय संगठन कछिन रिबेल्स के साथ संपर्क हुआ। इसके अलावा उन्हें बांग्लादेश और पाकिस्तान के खुफिया एजेन्सी द्वारा भी मदद मिली। उल्फा ने तिनसुखिया और डिब्रूगढ़ में अपने सैन्य कैम्प स्थापित किए। इन सब की मदद से उल्फा के केडर प्रशिक्षित हुए। पाकिस्तान में भी कई उल्फाइयों ने प्रशिक्षण लिया। इसके बाद इसने असम में एक के बाद एक धमाके करके वर्तमान सरकार और केंद्र सरकार को चुनौती देने लगा। अपनी ताकत बढ़ाने के लिए आवश्यक पैसे के लिए बैंक डकैती और मूलवासी के अलावा अन्य व्यापारियों का अपहरण करके फिरौती लेना शुरू किया। 1990 ई. में व्यवसायी ब्रिटिश बिजनेस मैन लॉर्ड स्वराज पॉल के भाई सुरेन्द्र पॉल का अपहरण कर फिरौती ना मिलने पर हत्या की। इस तरह कई सरकारी अधिकारी, नेताओं और हिंदी भाषी लोगों का अपहरण और हत्या का सिलसिला उल्फा ने जारी रखा।

उल्फा को अस्सी और नव्वद के दशक में असमियों का जनसमर्थन प्राप्त था। उनका मानना था कि, उल्फा हमारे हक, अधिकार के लिए लढ रहें हैं। प्रदीप सौरभ 'देश भीतर देश' उपन्यास में असमी लोगों को हिंदी भाषियों ने कैसा शोषण किया है यह एक पात्र बुलबुल हजारिका द्वारा बताते है- "आपके देश के लोगों यहाँ ने यहाँ की धरती से खूब कमाया, लेकिन एक भी पैसा यहाँ नहीं लगाया। अंग्रेज जैसे इंडिया की सम्पदा इंग्लैंड ले गये थे, वैसे ही आपके लोगों ने असम के साथ किया हैं। एक ही देश के लोग क्या अपने ही लोगों में ऐसा करते हैं कि, उन्हें लूटें और कुछ भी न सोचें। हम भोले हैं तो, हमें एक मीटर कपड़े को चारों तरफ से नाप कर चार मीटर कह कर आपके देश के लोगों ने बेचा। नमक के वज़न के बराबर चाय पत्ती ली। चाय का एक्साइज टैक्स बंगाल सरकार को जाता है क्योंकि, इन कम्पनियों के मुख्यालय कोलकाता में हैं। पेट्रोल की रायल्टी हमें गुजरात से कम मिलती है। और क्या क्या बतायें आपको अपने राज्य की लूट के बारें में।"[6] इस तरह अन्य जगह बताया गया बुलबुल द्वारा- "इंडिया से आने वाले (असम के नेक चैन के उस पार से) खाली हाथ आते हैं और देखते ही देखते वो हमारी जमीन पर अपनी हवेलियाँ बना लेते हैं। यही नहीं यहाँ की लूट का माल अपने यहाँ हर साल भेज देते हैं। वे असम से बाहर अपनी जन्मभूमि को देश बोलते हैं। इस धरती को वह लूटने की जगह मानते हैं बस।"[7]

उपरोक्त कारणों से असमिया लोगो में केन्द्र सरकार और विदेशी मानू (असम के नेक चैन के उस पार रहने वाले लोग) के प्रति नफरत थी और इसका सही इलाज स्वतंत्र असम राज्य के निर्मिती पर ही संभव है। ऐसी धारणा असमिया जनता की थी। उल्फा को इसलिए स्थानिकों का समर्थन था। इसके अलावा एक और वजह बेरोजगारी थी। आन्दोलन तथा प्रादेशिक अशान्तता के वजह से रोजगार की कमतरता थी। कई-कई दिन कॉलेज बंद रहते थे। पढ़ाई में कौशल विकास का अभाव था। इसलिए प्राइवेट कम्पनीयाँ नौकरी नहीं देती थी। सरकारी प्रशासन में भी उच्च पद पर गैर आसामी लोग थे।

उल्फा युवा कैडरों की भर्ती कर रहा था। वहाँ के स्थानिक युवाओं में "बेरोजगार घूमने से अच्छा हैं कि, उल्फा में शामिल हो कर असम की आजादी के साथ मासिक वेतन भी हासिल हो जाएगा। उल्फा अपने कैडरों को परिवार पालने के लिए मासिक वेतन जैसा ही कुछ देता है। युवाओं में उल्फा के प्रति क्रेज की वजह यह भी थी कि, लड़कियाँ अंडरग्राउंड उल्फाइयों पर मरती थीं।"[8] इस वजह से भी अक्सर युवक उल्फा में शामिल होते थे।

असम में उल्फा का आंतक बढ़ा तो केन्द्र सरकार ने उल्फा को आतंकवादी संगठन के लिस्ट में डाला। असम सरकार को बर्खास्त करके राष्ट्रपति शासन लागू किया। सेना को अधिकार दिए। सेना ने 30 नवंबर 1990 में ऑपरेशन बजरंग शुरू किया। सेना ने उल्फा के शिवर और कम्पों पर तेज़ हमला किया। इसके लिए वे स्थानिक असमियों के घरों की रात-रात

तलाशी लेते। उनके साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार करते थे। इनके प्रभाव से गाँव के गाँव खाली हो जाते थे। घर में सिर्फ बुढ़ी औरतें रहती थी। यह उनके साथ भी बदसलूकी करते थे। देश भीतर देश उपन्यास में मिल्की ने "बताया था कि घर से बाहर ले जाने वाले कमांडो ने उसके स्तनों को दबाया था। उसके होठ चूमने की कोशिश की थी। प्रतिकार करने पर वह उसे खींच कर बाहर लाया था। इसी के साथ मिल्की ने पूछा था- "तुम्हारे देश में महिलाओं और लड़कियों के साथ इस तरह का व्यवहार किया जाता है ?"[9]

"मानवाधिकार संगठन एमनेस्टी इंटरनेशनल ने दावा किया कि ऑपरेशन बजरंग के दौरान असम के ग्रामीणों को आतंकित किया गया क्योंकि भारतीय सेना ने बलात्कार, हत्या और अवैध गिरफ्तारी की हिंसा की थी।"[10] सेना के हमले से उल्फा का भारी नुकसान हुआ। स्थानिक असमिया लोगों में सेना के प्रति अत्याधिक जनआक्रोश था। उल्फा ने रणनीति तहत एकतर्फा समझौता किया। इसलिए ऑपरेशन बजरंग को मार्च 1991 में रोक दिया गया। इस बीच उल्फा ने नए कैडरों की भर्ती और हथियार एकत्रित किए। एक बार फिर उल्फा ने पलटवार किया। सार्वजनिक स्थानों को बम से उड़ाया। सुरक्षा बलों पर हमले किए। नतीजतन सेना को फिर एक बार सितंबर 1991 में ही ऑपरेशन राइनो शुरु करना पड़ा। सेना ने अंदाधुन्द छापे मारी की। कई लोगों को हिरासत में लिया। उल्फा के शिविरों में घूसकर उन्हें घेरकर मारा। "उल्फा कैडरों की लाशें सेना के ट्रकों में लादी जाने लगीं। कुछ उल्फाई जंगल के और भीतर चले गये। असम की सीमा से बाहर भी कुछ भाग गये। आपरेशन राइनों ने उल्फा को बर्बादी के कगार पर पहुंचा दिया था।"[11]

उल्फा के बड़े नेता बाग्लादेश में भाग गए थे। कुछ भूतान में भारतीय सिमा के पास कम्प लगाए थे। वे भारत में हमला करके वापस चले जाते थे। केन्द्र सरकार ने बाग्लादेश और भूतान से बातचीत कर उन पर दबाव डाला। भूतान की रायल आर्मी ने 15 दिसंबर 2003 को ऑपरेशन 'ऑल क्लियर' किया। "असम से जुडने वाली भूतान की सीमा में आतंकवादियों के मौजूद तीस शिविरों को फौज ने खत्म कर दिया है। इन शिविरों में उल्फा के अलावा एनडीएफबी और कामतापुर लिबरेशन आर्मी के शिविर थे। ऑल क्लियर आपरेशन ने उल्फा की कमर तोड़ दी थी।"[12]

उल्फा को पाकिस्तान के खुफिया एजेन्सियों का समर्थन और मदद थी। धीरे-धीरे उसने और ताकत बढ़ाना शुरु किया। सभी शीर्ष नेता बांग्लादेश भाग गए थे। असम में उल्फा अन्धी कार्रवाई करने लगा। उसकी आतंकी कार्रवाइयों में बच्चे, जवान बूढ़े और औरतें मर रही थीं। इसी बीच 30 अक्तुबर 2008 को असम में एक के बाद एक तेरह सिरियल ब्लास्ट हुए। "जिसमें 77 लोग मारे गए और 300 से ज्यादा लोग घायल हुए। इसमें बड़ी संख्या में असमिया लोग भी मेरे और घायल हुए। अब तक उल्फा के खिलाफ राज्य में माहौल बनने लगा था। उल्फा का चहेरा बेनकाब हो गया था। यह पूरी तरह से आततायी संगठन हो गया था, जिसका जमीनी आधार खत्म हो रहा था।"[13]

बांग्लादेश ने उल्फा के नेताओं को पकडकर भारत के हवाले किया। जिसमें 30 नवंबर 2009 को उल्फा के अध्यक्ष अरविन्द राजखोवा को पकड़ा गया। इनके साथ राजू बरुआ, अनूप चेतिया, शशिधर चौधरी, चित्रबान हजारिका बांग्लादेश से असम में ले आये गये थे। फिर बाद में 2011 ई. में इन्हें रिहा कर दिया गया। इन्होंने 3 सितंबर 2011 को केंद्र-राज्य सरकार और उल्फा के बीच सस्पेंशन ऑफ ऑपरेशंस (S00) समझौता किया।

परेश बरुआ बांग्लादेश को छोड़कर चीन म्यांमार सीमा के पास चीन में रहने लगा है। उल्फा के वार्ता समर्थक गुट के समझौते को बरुआ ने ठूकरा दिया और उल्फा के अध्यक्ष पद से राजखोवा को निष्काशित कर 2012 में दूसरे को नियुक्त कर दिया। परेश बरुआ अभी भी स्वतंत्र असम की माँग रखता है। उसने अपने संगठन का नाम बदलकर 'उल्फा आय' रखा है। "29 दिसंबर 2023 को उल्फा के वार्ता

समर्थक गुट ने केंद्र और असम सरकार के साथ एक त्रिपक्षीय शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए।"[14] इस तरह असम में अब उल्फा का प्रभाव लगभग खत्म हो गया है। किंतु जिस कारण यह प्रारंभ हुआ था बांग्लादेश घूसपैठी को निकालने के लिए वह अब तक दुगने हो गए हैं। केंद्र सरकार ने इसलिए असम में नागरिक संशोधन अधिनियम (CAA) को लाया गया है।

निष्कर्ष: यह कहा जा सकता है कि, किसी प्रदेश की समय रहते सामाजिक, आर्थिक तथा राजकीय समस्याओं का उचित समाधान ना किया जाए तो वहाँ पर अराजकता निर्माण हो सकती है। जिसका परिणाम बहुत विश्वसंक होता है। इसका पता हमे उपरोक्त शोध लेख से उल्फा के उदाहरण से ज्ञात होता है। कुछ यही हाल पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों, और पंजाब तथा जम्मू काश्मिर और विश्व के अन्य देशों में है।

संदर्भ सूची :

1. के. आर. गुप्ता : ग्लोबल टेररिज्म, पृ.-01.
2. आर. एन. त्रिवेदी एवं एम. पी. राय : भारतीय सरकार एवं राजनीति, पृ.-559.
3. प्रदीप सौरभ: देश भीतर देश: वाणी प्रकाशन: नई दिल्ली: प्र.सं.2012, पृ.-94.
4. https://en.m.wikipedia.org/wiki/assam_raccord.
5. प्रदीप सौरभ: देश भीतर देश: वाणी प्रकाशन: नई दिल्ली: प्र.सं.2012, पृ.-94.
6. वही, पृ.-71.
7. वही, पृ.-77.
8. वही, पृ.-92.
9. वही, पृ.-82.
10. https://en.m.wikipedia.org/wiki (एमनेस्टी 1993 पृ.25).
11. प्रदीप सौरभ: देश भीतर देश: वाणी प्रकाशन: नई दिल्ली: प्र.सं.2012: पृ.95.
12. वही, पृ.-134.
13. वही, पृ.-150.
14. https//www.thehindu,com (4 जनवरी 20).